# দেশের প্রক

# ডাঃ ঐহীরালাল সরকার

বাটাজোড় এনাতিম্যালেরিয়া সমিতি হইতে প্রকাশিত পো: নহাটা ( যশোহর )

२४हे मार्क, ३३७२।

# **डे**९नर्ग

भाननीय

ঞ্জীযুক্ত গোপালচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় এম্ বি রায়বাহাছর

· **জ্রী** শীচরণকমলেষ্

মহাজান,

দরিত্র গ্রন্থকারের অকিঞ্চিৎকর এই কুত্র অর্থ্য শ্রুমান্তব্যির সহিত অর্পিত হইল।

প্রস্কার।

## দেশের শত্রু

### ম্যালেরিয়া

क्रान्त्र मद्ध यद्ध दक्षा १ वन दर्शन छाहे. कीयन भक्त भागरबत, कुलना कांत्र नाहे ? मानात वारमा दिन एर खारे मनारे शामि खता. धन शास जाम भारतात्र किंग केंक्शकरा : কুঞ্জে কুঞ্জে ফুলের হাসি, মিষ্টি পানীর গান, नात्य नात्य मान्य हिन, कृति-छत्रा व्यान ; বাপানভারা পাষ্ট গাড়ী চনত হুপে মাঠে, বাখাল ছেলে গান গেছে নাচ্ত পদ্মবাটে। भारत मार्ग भद्रव किन कान्स डेरमव. আকাশ বাতাস ভরা ছিল লোকের কল্বৰ। যোগান ছিল শঙ শত ভামের মত বলী, (मना शही, काला मान, गतनांत्र की त हानी। থাইত ভারা একটা পাঠা, ধামা ভরা 🏞 कनम खता ठाउँका इव शावा शावा मिटि : পাছে हिंहि हन् । हात्रा वह द्यासन श्व. के उक्स कान्ड डाडा कृष्टि व कमहर । दमाथा तम नव वन तमि १ कि ह त्य व्याख नाहे. কে ভাছিল অথের অপন বল দেখি ভাই। मिना चारक, नांदे प्रवटा, नांदेक श्राट्य लाव क्रमव्हन भक्षी खाब एक धनान नमान

मानुष नाहे शक नाहे (करछ (र नाहे धान. ব্দল ভয়া বাস্কভিটে ভয়া নশার তান। भाना करा नही भूकृत, शाह्य महित्का कन. আলো নাই বাভাগ নাই, নাই পানায় জন। পেটমোটা পিলে জোডা এই চাবি ক্ষম কেছ: ब्राट्श (नाटक क्रक्रमंड कीर्न क्रीहे त्मर । বন্ত পশু সাথে ভারা বাস করে আজ বনে. মরণ-কোলে শুরে কাটায় নিরানন মনে। (क कतिन अपन मना अन त्र पन मिया. গোপন শত্রু মান্তবের নামটি ম্যালেরিয়া। यात्रमान देःतात्व युष्ठ उत्तक् निन्ध्य. वक नक (नाटकत शांव क'न जाटक कहा ভা'হতে ছবিক লোক বছর বছর ধ'রে व्यायात्मत वांश्मात्मत्न व्यत कत्त्र यत्त्र । वर्षीकांत्र भित्क मित्क छात्र याघ नव करन. মালেপীয়। আসেন তখন মহা কুতুহলে। বাড়ীয় ৰাড়ী ছেলে ৰুড়ো কেউ থাকেনা বাকী, व । शत्र बदा दक्द भारत विरक्ष काकि। াথা দিবার কেউ থাকেনা সবাই চিৎপাত. এড়ার নাকে। যোরান বুড়ো মালেরিয়ার হাত। मारत्त्र रकारन रथांका मरत्, मा'त बारकना ह न. क् कारत वा सम्बद्ध वन, मुवाहे स्व स्वर्ड मा क्रम विश्वत कारता वा ध्यान क्रमाय वाहिताय, वाफ़ी ७६ नवारे केंद्रि कतिया राव राव।

পালের গরু বাঁধা থাকে খেতে না পার যাস. অভি চৰ্ম পার হয়ে যায়, শুক্তিয়ে যার মান্। क्या हत गांकर छाहेत्र क्या द्वारत थान. সারা বছর কি খেরে বা বাঁচৰে বল প্রার্ণ ? জমি বাঁধা, গুহুনা বাঁধা জীর হাতের বালা-মহাজনের দেনার লায়ে বিধ্য বাড়ে জালা: किरहे मधी निकास ब्राह भाग माखा हाता. मकन काला गण अदिया छाएल भारतत योगा। একবার যদি ভোকে দেহে মাত্রেরিয়া বিধ বছর ভ'রে ভোগে জগে, আশা অংশিশ। पाकाद्वत केवन शाम धीर गाँउ ८४८०. ८का विर्व के द्या ना किए. भट्ड विमन भीति। दरलाभागी दर्शामव गांभी कविताकी बाढ़ी, খেতে খেতে জ্বল ম্যে লেটের নাড়ী ছাঁড়ী। निमान काटन वार्तांड नाट्य या हें छ। श्राय. হাত পা ফুলে ভাঙাতাড়ি যমের বাড়ী য়ায়। বাড়ী বাড়ী একই ছবি শোকের কালা াটি. এক নিমিয়ে ভবের আশা হয়ে দায় সৰ মীনী वाश्मा कुछ मालितियात विक्रम विखय, भवात काल कलकाशा त्याप्य यामावत । কত সোনার পল্লীভবন নিবিড বনে ঘেরা. चारह (मर्था ठरे ठांत्रि कन कर्य कांच्य मत्री. প্রাসাদ সম কোটাবাড়ী চম্মটিকার বাসা. बांच कांनुटक कृत्रभ्रम द्वकांच द्वर्था थाना ।

यानांत (क्यांत नामिं छान गहतवांत्री काल, योष्ट्रय द्वारा थाक्टल शास्त्र मार्ट्यक्रिया सार्ट्य बद्भावनात्रीय मुर्वत शांनि (भोद्या बीद्या दन-किहूरै दर चांत्र नाहेदा चांकि ग्वाहे निःग्रहम । কত শত ঘোৱান ছেলে সেরা মাধার মণি-ंबारनविद्यात করাল মুখে তাজিছে পরাণি। चाह्य वांत्रा क्या त्मह वांकी कुछ अक्कान, मार्थाम गरम इःटबन्न (वासा कर्त्रक सीवन। वांश्मा छूड़ सामज लाक मवाहे व दकांत, আরপুর্ণার বরে আক্তেকে আর মেলা ভার! আবাদ বিনা গোনার কেতে উলুকাশেময়, শাস্ত্র মাজি কোথা ? সবু হরেছে কয়। **मिन्नी** ठांथी नवाह भिटन कत्र्ह हाहाकात, **मिकिविधीन मारह कर्ष कि करत दावनात ?** সারা বছর শুয়ে কাটার কেবা করে কাজ, म्बन्छ। प्रति चरत्र चरत्र मीन कालात्मत्र मास ! দেলের নিশা এমন কেন ভাবে কেবা আর, মাঞ্জু কেবা আছে দেশে কর্বে প্রতীকার ? मर्द्य त्य इस त्मकि आत्र छाडे थात्क शक्कीयत्त ? ৰ্বিশের মারা পরিছরি সহবে বাদ করে! কর যারা, কাভাল যারা, দেশে পাকে ভারা, भीवत्न धिकांत्र लग्न गकन हरत्र हाता ! कानृष्टित लांशरे निष्य भारक छूमछि करत, বিধিলিশি খণ্ডে কেবা ? ভেবে ভেবে ময়ে।

ভাগালোবে কপাল যক বিবাভারই লেখা---नव कि दा कारे, क्यान मुक्ता बरमत नाद्य स्पूर्ण ! হতভাগ্য বাংশাবাসীয়-লাফা অভিযুক্ত কোন বা পাপে পাছি আমগা এডই মন্ত্ৰীপ ! त्कान वा त्मरणव माञ्च छोहेरत अमन छारव सरव, क्षेत्र कारम ना क्षेत्र शास्त्र ना भरत शास्त्र शरक शरक शरक श পতর সমান প্রাণের বাতী, মান্তবের कি নাই, যোদের ভাগ্যে এমন কেন ভেবে মরি তাই ৷ ম্যালেরিয়ার ক্ষত্তমি ইতালী দেশ নাম, প্রিবীতে ছিল যাতা যমের সমান ধাম। পানামা আৰু আনজিবিধা বত বত মেশে মাালেরিয়া ছিল সেথার রক্তথানী বেলে। नक नक माञ्च (मणीय मार्गिविया करते. वाश्मारमरमञ्जलमात्र मम विमा रहेशे घरता ছারা ত আরু মোদের মত যে সে বান্দা নয়. ভাগালিপি মেনে কভু চুপ না করে বত কটে করি তারা উপায় উদ্ভাবন, भारतिशात छीयन काल करत निवातने चाक रक त्रभा रकडे कारन ना गारिनविश्वकार्य. আনন্দেতে ভরা সে দেশ, স্বর্গসম ধাম। धकानमुका नाहेरका मिथान, नाहेरका स्त्रांशक रनम, त्नाटकत कावा द्वारशत बाला नाहि त्कान द्वा খাস্থা অৰ্থ কুখ মোক্ষ দদা বিরাজ করে, ভূনোকে আৰু স্বৰ্গপুরী অভূন লোভা ধরে।

चामता छव् किंत्र मति, हुनति करत बरम, এত কাল্লা মোদের কাপে কভু কি আর পশে ? धकि नित्मय नाई कोशांद्रा, त्क्या वन शंग्न, निट्यत वर्षि विल मिट्य म्हान्य मिटक छात्र ? গৰাবাজী প্রনিন্দার যোদের কাটে কাল, ভূলেও কি কেউ জান্তে চাতে দেশের কিবা হাল ? क्य प्रत्व चाहि सामा, अक्टमा हार्थ हूंनी, ছড়ি গতে সভা বাবু কিচিব মিচির বুলি ! নিজ্নী বাভি হাতে করে আতর মেধে চুলে দিনেরেতে ফোকাদ করে কেবল কুত্চলে! দেশের চিস্তা নাইকো ভাদের একি বড় লাজ, এরাও যদি হ'ত মারুষ, হ'ত দেশের কাজ। দেশের যত মা কন্দ্রীরা প্রদা দিয়ে খেরা (केंद्रिक छोड़ोन-पिवानिनि, इत्य कांख यहा । কোলের পোকা ছেডে গেছে একটা দিনের জ্বে মায়ের প্রাপু সেকি আঘাত বলি কেমন করে ! জরের मा/ध कि है य होन मिक निषम कै। भ মা বল্পে আর ডাক্লোন। সে, এ ক ম্নভাপ ! মান্তে, বুকে শেল বি'ধিয়ে চির অন্ধকারে क् कि कि ए अकिए रागन, श्रंथ विन कारत ? र् डै विश्ववाद रक्ता-निधि मागदामहा धन , মকালেতে কালের কোলে করিল শহন ৷ নিদাৰণ দে কাহিনী অতীৰ ভীষণ, শতমূপে কেবা পারে করিতে বর্ণন।

ভৰে কি যোগের হায় কোন আশা নাই। কে বলিবে কে শুনিবে বল কোথা বাই ? এইভাবে বছরেতে লোক ক্ষয় কলে — থাকিবে বাড়ালী নাম কভ ধরাতলৈ ? নিশ্চয় জানিও ভাই অকাল্যরণ— चामारमत् ভार्या चार्ड गमांडे नियम । অক্তান আঁধারে হারা সদা করে বাস, স্বাই ভাক্টী করি করে উপ্তাস। ঈশুর ভর্মা কবি, চেষ্টাহানভাবে, মৰ্গ ভারা এ জগতে নিশ্চয় জানিবে। ক্ষী জ্ঞানী যত হত গাধ মতীমান করে ভ উত্তর এর উপাধ বিধার। উপায় পাকিতে এবে কেন খিছে ভাই. हुभ कति शांकि तुशा मध्य काउँ। है। কত কাল হতে ভাই কেচ নাচি ভানে मार्गिदिया तामा दाचि चाटक वांच्या ।

### ইতিহাস

প্রাচীন চিকিৎদারত চরকপ্রধান,
মুনিনধা সর্কলেই অগ্নিবেশ নাম;
বিষম ক্ষরেব কথা লিখেছেন তিনি
ম্যালেরিয়া বলি তাবে সবে অসুমানি।
আর আর কত কত গ্রন্থ পুবাতন—
ভিল্ল দেশে ভিল্ল নামে আছ্যে বর্ণন;

धारे बंदठ काना सार मर्स दान उदा যালেরিয়া বছকাল প্রভাব বিস্তারে। वहबून बढ़ि खहें छीवन बाक्ती वह लिंग स्वरम कति वह लान नानि-बीत्रशस्य मृथीवृत्क करत विहत्रण द्धार करण व कारव, ना कारक मजन। কিন্তু ভাই মজা এক শুন দিয়ে মন জন্মকথা ম্যালেরিয়া জ্ঞাত কারণ। কি ভাবেতে জন্ম তার কিব। রূপ ধরে কিরপেতে প্রাণীকুল সভত সংহরে: धारे मय उपकथा नाकि दिल काना তাই ছিল কর্ম দেশে এত তার হানা। নানাভাবে সুধীজন বছকাল প্রে ব্ছ গবেষণা করি, বহু চেষ্টা করে, শ্বরূপ কারণ ভার করেছে নির্ব্য কি ভাটেত বৃদ্ধি হয়, কিরপেতে কয়।

### কারণ

শ্রু কেনী নামে মণা আছে সর্বদেশে,

বর্জ দেহ ভরা তার ম্যালেরিয়া বিষে।

বিত্ত মশা বারে বারে করয়ে দংশন

বিজ্ঞান্ত হ'য়ে পড়ে সেই সেই জন।

ক্ষুত্র অণুসম কীট নাহি বাছ দেখা,

নিমেবে ব্যিত হয় নাহি বেখাজোকা।

প্রাণিদেকে রক্ষ খেরে বাড়ে জগদন লাখে লাখে—কোটা কোটা—কে করে গদন !

#### লেক্ড

14 kg

প্রথমেতে শীত করি, পরে আবের কলা রক্তে সমে দ অপু করি মধানত। দেহ কঁলো লবার— দাঁতে লাগে দাঁতি, মহাবলশানী নাব জমনি চিৎপাঠ। অন্তিমা মুর্বি দরি দড়ে কাড়ে শাপ, সব্ব হল মালে যায় লাডে দদা ইপি। দেই লাগে কারো দেহ পুডে ভেল্ম হয়, নিম্মে প্রাণি কাবো—ক্ষালে বাহির্ম অবশেষে ধর্মক্রান মহাবোগ এসে ভিম হতে সব্ব হল স্বর্ধ দেহ ভেলে; নিবাক অবাদ ভাবে মুক্ষেক প্রোহ

#### বিভিন্ন লক্ষণ

অক্সাং অব । ০গেন— কোন কোন জন, সংজ্ঞাপুর হায় পড়ে ঘোৰ অক্টেন। ডাকিলে না ডাক ডনে, সাড়া নাছি দেং, এ লক্ষণ সকাস্তানে প্রাণবাতী হয়। কারো হয় রক্ষবমি, কারো ভেদ হয় প্রস্রাবেতে কারে। কারো রক্ত বাহিরয়। কলেরার মত কারো হয় যে লক্ষণ
কলেবং জেলা কমে কারে নিউমোনিয়া প্রার,
বহুরূপী মালেরিয়া ধরা বড় দার।
লরিপাত অর সনে বড় কোলাকুলি,
প্রোগী-দেহে ভ্রমে সদা এক সঙ্গে মিলি।
আর যত অর ভাই আছে বাংলাদেশে
স্বাকার সনে আছে মালেরিয়া মিশে।
অর বন্ধ হলে কড় নাহি হায় বিহ—
দেহ মধ্যে গুপ্তভালে পাকে অহনিশ।
একবার জর হলে হয় বার বার,
সারিয়া না সারে অব আগের অারবার।

#### দৈহিক অপচয়

রক্ত থায়, মাংস থা১, আর থাম মজ্জা,
দেহ মধাে তিক করে নব নব সজ্জা।
দিন দিন গক্তি কমে, সদা বাড়ে কয়,
হাতে াায়ে জল জমে মৃহ নাড়ী বয়।
মদি, ঠেউ বাঁচে ভাই বিধা হার বরে
শুলিইন হয়ে থাকে এ ভবদংসারে।
নবীয়া তেজ কান্তি সকলোরা হয়
কক্ষম আতৃর ভাবে সদা বিচরয়।
বাংসার কি যে দশা শতমুধে হায়,
নিদারুল দে কি ছবি কহা নাহি য়য়।

অধম বাঙালী বলে গবে দ্বপা করে,
শক্তীহীন ব'লে কেহ কভু না আগরে।
হেন শক্তি বিনা ভাই মিছে আশা ভবে,
শক্তি বিনা কোন কথা কে করেছে কবে?
স্থা দেহ দীর্ঘ আয়ু সকাম্প্রসার—
স্কামোক্ষ সক্ষসিদ্ধি কিবা বল আর প

### প্রতীকারের উপায়

প্রতিদিন হয় মৃত্যু হাজার—হাস্থার, তবে বল কিবা দশা আছয়ে বাংলার উঠ জাগো ভাই সব ঘুমাইও না আর हक् थुनि हात्रिभिक (भग এकवात्र। क्रमाम क्रायम इत्य कानिष्ट न काम, চপ করে বগে কেন হও নাজেহাল। সবে মিলি একমনে লাগ ভাই কাৰে চেইাহীন ভাবে বুগা বদে থাকা সাদে वहान्तम मार्गास्त्रविद्या कर्यस्क विरम्हन. নিক্ষ পারিব মোরা থাকে যেন **ক্ষেদ।** যদিও কাঙাল মোহা দীন হ'তে দীন অন্তরে জাগাও ভাই বাসনা নবীন। একদনে মিলি সবে হিম্মুসলমান शांटलविद्या नाट्य मृद्य इत काख्यान মহাশক্ত মানবের এনোফেলী মশা বে করেছে বাংলার ছিন্ন ভিন্ন দশা !

नम्दन উट्टिन क्य बनाकून छाहे. रेहा जिन्न खुडीकात-नाहे-नाह-नाह। क्ष ब्रिक डिलेक्स करताना निक्स, व्यवस्था दर्शना नटक महानक कर । বোপঝাডে জন্ম মৰা. পচা ডোবা খানা---্রীনি রাশি পাড়ে ডিম কে করে গণনা। বাসগৃহ সন্মিকটে গাছ পালা মাঝে खन खन छान मित्र मनाहे विदाहक । শক্ষাকালে বাহিরয় আধারেতে মিশে. বিষম দংশনে কেই নাহি পায় দিলে। রোগী-দেই দংশিয়া বিষ মেথে উল্লে-স্থা দেহ কামড়ায় পূর্ণ কুড়চলে। একটা কামড়ে ভাই কোনে রেখো মনে নিমেষে হইবে দেখা তব মৃত্যু সনে। অঙ্গলেতে রুঘরা ঘর গাছপালাময়, মশাপূর্ণ চারিদিক, ঘোর শত্রু রয়। আম সাম বাশবাড় বৃক্ষ ফলকর, বিশ্রীক নাধি স্থান রোপেছ বিভার; িপন মরণ ডাকি আনিয়াছ ভূমি— বিন কভু নাহি হয় তব বাসভূমি। मिनरमण्ड नाहि यथा भरन द्विकद्र, পৃতিগন্ধ ভাতদেতে ভীত্র খরতর। यना याहि लाका मधा क्रब किन किन, দর্শ ব্যাস কৃষ্টি করে ভ্রমে রাজি দিন।

क्रम वायु जारमामुख शाक्षशैन स्राम, পত হয়ে আছ ভাই পত সাথে মিশে। বাবে থার, সাপে খাহ, রোগে ভূপে মরে, व्यानुष्टे व्यानुष्टे विशि व्याक्त हुल करत । গাছ পালা কাটি ভাই কর পরিষার— মশাকুল ধ্বংস হবে পাইবে নিস্তার। পচা ডোবা খানাখোন্দ মাটা কাটি ভরি. ग्रभाकत वर्ण मार्गा नव वर्ण धति। কেরোসিন মহা বিষ মশকের হয় होटना मना ८३०म (मधा, ८४०म मना उस । গাছের বছই মাল, বাশঝাড় পুঁঞ্জি,---আনভেতে কাটে কাল শক্ত আন গুঁজি। নিতা হচ্ছে বংশনাশ ভাষ' চকুললে, नृत्या दायाना कि हु, नृत्याद कि माल ? নিরমল বারি ভাই, তাপ, মুক্ত বায়ু कत हाई. यह हाई, भीष भवमाय । ঝরঝরে পরিষ্কার স্থানে বাঁধ বাসা मोर्च किन वैक्तिवात उदय क्राव आना। দরে রামি গাছপালা আবর্জনা রাশি वान कत्र महानत्न चरत्र चरत्र शाम । ঘরে ঘরে দায়ইখানা হণে' কিবা হায়, ম্যালেরিয়া কোপ ভাইরে কভু নাহি যায়। একা তব কর্ম নয়, ভূগি পভিয়ান সৰে মিলি এস ভাই হয়ে এক প্ৰাণ।

বিষে বাংলার প্রতি অনে অনে,
বিশেষ বাংলার প্রতি অনে অনে,
বাংলার বাণী আছে ভনাও শ্রবণে।
বার বাংলা আছি বারা বঙ্গ- স্থলভান,
বারা বাংলা শক্তি আছে এন লয়ে সালে,
বিশাভার আনিকাদ ধরি নিজ মাপে।
মম এই কুল শক্তি আত্মনিবেদন,
বুকভরা শোকে।জ্বাস করণ ক্রন্দন,
দেশবাসী-করে তুলি অভি সমাদরে,
করিত্ব অপ্নি আজি ভক্তিশ্রমা ভরে

Printed by L. M. Roy.
at the Lalit Press
116, Manicktala Street, Calcutta.